www.thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13

सृष्टि संवत् 1960853114
विक्रम संवत् 2070
दयानन्दाब्द 190

॥ ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 10 अंक : 14 रोहतक, 7 सितम्बर, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

ईश्वर ने सृष्टि को किसलिए उत्पन्न किया

❑ लालचन्द चौहान, # 591/12, पंचकूला (हरयाणा)

सृष्टि प्रवाह रूप से अनादि है, जब प्रलय होता है तो जीवों के कर्म बिना फल भोगे रह जाते हैं, जिनका फल भोगना उनके लिए अनिवार्य है और फल बिना जगत् के अन्यत्र भोगे नहीं जा सकते, इसलिए ईश्वर पुन: सृष्टि रचता है, दूसरे ईश्वर अपनी अनन्त विद्या, ज्ञान, बल का प्रकाश सृष्टि रचकर करता है। सृष्टि रचना से यह भी अभिप्राय सिद्ध होता है कि प्राणी सुख पाते हैं अर्थात् ईश्वर प्राणियों के सुखभोग के लिए असंख्य पदार्थों की सृष्टि रचना करता है। जब जगत् का आरम्भ होता है, उससे पहली अवस्था का नाम प्रलय है, जो पदार्थ प्रलय, सृष्टि और स्थिति के अनादि चक्र से प्रलय में सूक्ष्म रूप से रहते हैं वे परमात्मा की इच्छा से आकार पाकर संसार में प्रकट होते हैं।

जब यह कार्य सृष्टि आरम्भ नहीं हुई थी तब एक सर्वशक्तिमान् परमेश्वर और जगत् बनाने की सामग्री विद्यमान थी। यह सब जगत् उसी में इकट्ठा होता है और उसी में बिखर जाता है। जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय ईश्वर के अधीन है, उस समय असत् शून्य नाम आकाश अर्थात् जो नेत्रों से देखने में नहीं आता, वह भी नहीं था, क्योंकि उस समय उसका व्यवहार न था, उस काल में सत् अर्थात् सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण मिलकर जो प्रधान कहलाता है, वह भी नहीं था। उस समय परमाणु भी नहीं थे। विराट् अर्थात् जो जगत् के निवास का स्थान है वह भी नहीं था। जब जगत् नहीं था तब मृत्यु भी नहीं थी, क्योंकि जब स्थूल जगत् उत्पन्न होके वर्तमान हो पुन: उसका और शरीर का वियोग हो तब मृत्यु होती है, उस समय शरीर आदि उत्पन्न नहीं हुए थे।

परमेश्वर और जगत् का कारण दोनों को जानने की आवश्यकता है इनको जाने बगैर सृष्टि रचना विषय को ठीक प्रकार से जान पाना कठिन है। पहले ईश्वर को जानें—

जो मारता है और जीवन देता है, गति देता है, जिससे समस्त लोक-लोकान्तर जीवन पाते हैं। जगत् के प्रलय सर्ग एवं स्थिति का नियन्ता है, वह परमात्मा है। परमेश्वर सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक और सर्वसामर्थ्यवान् है, वैसे तो ईश्वर के गुणात्मक असंख्य नाम हैं, यहां पर इन तीन पर विचार करेंगे।

सर्वव्यापक—ईश्वर पृथिवी आदि जगत् के साथ व्यापक होके स्थित है और उससे अलग भी है, क्योंकि उसमें जन्म आदि व्यवहार नहीं है और अपनी सामर्थ्य से सब जगत् को उत्पन्न भी करता है और आप कभी जन्म नहीं लेता। इस स्थूल जगत् का जन्म और विनाश सदा होता रहता है।

सर्वशक्तिमान्—जो जगत् उत्पन्न हुआ था, जो होगा और जो इस समय है, इस तीन प्रकार के जगत् को वही रचता है, उससे भिन्न कोई जगत् रचने वाला नहीं है, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान् है। जो सम्पूर्ण जगत् प्रकाशित हो रहा है वह ईश्वर के एक देश में बसता है, ईश्वर अपने काम अर्थात् उत्पत्ति, पालन, प्रलय आदि और सब जीवों के पाप-पुण्य की यथायोग्य व्यवस्था करने में किंचित् भी किसी की सहायता नहीं लेता अर्थात् अपनी अनन्त सामर्थ्य से ही सब अपना काम पूर्ण कर लेता है, इसीलिए परमात्मा ही पूर्ण पुरुष है। यह महर्षि दयानन्द जी का चिंतन है।

सर्वसामर्थ्यवान्—परमेश्वर की अनन्त सामर्थ्य ही इस जगत् को बनाने की सामग्री है। जो परमेश्वर के सामर्थ्य से उत्पन्न हुआ जिसको मूल प्रकृति कहते हैं, जिसका शरीर ब्रह्माण्ड के समतुल्य जिसके सूर्य चन्द्रमा नेत्र स्थानी हैं, वायु जिसका प्राण और पृथिवी जिसका पग है इत्यादि लक्षण वाला जो आकाश है, सो विराट् कहलाता है। वह प्रथम कला रूप परमेश्वर के सामर्थ्य से उत्पन्न होके प्रकाशमान हो रहा है, वह विराट् परमेश्वर से अलग और परमेश्वर भी इस संसार रूप देह से सदा अलग रहता है। यह संक्षिप्त में ईश्वर के सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वसामर्थ्यवान् के विषय में प्रकाश डाला है, जैसा महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में वर्णन किया है।

अब कारण के विषय में विचार करते हैं। कारण तीन हैं—निमित्त कारण, उपादान कारण और साधारण कारण।

निमित्त कारण—जिसके बनाने से कुछ बने, न बनाने से न बने, आप स्वयं बने नहीं, दूसरों को प्रकारान्तर बना देवे। निमित्त कारण दो प्रकार के होते हैं—एक परमात्मा और दूसरा जीव।

परमात्मा—सब सृष्टि को कारण से बनाने, धारने और प्रलय करने तथा सबकी व्यवस्था करने वाला मुख्य निमित्त कारण परमात्मा है।

जीव—परमेश्वर की सृष्टि में से पदार्थों को लेकर अनेकविध कार्यान्तर बनाने वाला साधारण निमित्त जीव है, जीव परमात्मा द्वारा प्रकृति के बनाये हुए पदार्थों से नित्य नई-नई खोज करता है। ईश्वर ने प्रकृति संसार के जीवों के सुख भोग के लिए बनाई और जीव जो पदार्थों की खोज से कुछ बनाते हैं, तो वह भी दूसरों के लिए बनाता है, उससे दूसरे भी लाभ उठाते हैं। परमात्मा का सृष्टि रचना में कोई स्वार्थ नहीं होता, परमात्मा नि:स्वार्थभाव से सृष्टि की रचना करता है और जीव जो कुछ भी बनाता है, उसके पीछे उसका अपना स्वार्थ भी जुड़ा होता है। परमात्मा सूर्य का प्रकाश, जीवन के लिए प्राणवायु, जल आदि नि:शुल्क सब गरीब अमीर को समान रूप से देता है। परमात्मा अमीर-गरीब का कोई भेदभाव नहीं रखता, ये तो जीव के अपने कर्म हैं जिनका भोग वह गरीब अमीर के रूप में भोगता है। मनुष्य जो भी कोई आविष्कार करके वस्तु का निर्माण करता है तो बराबर उसका मूल्य वसूलता है और लागत से कहीं ज्यादा वसूलता है। महर्षि दयानन्द इस विषय में लिखते हैं कि परमात्मा ने जीवों के लिए प्रकृति दान में दे रखी है, ये क्या परमात्मा का कम परोपकार है ? महर्षि दयानन्द पूर्ण रूप से ईश्वर को समर्पित थे। महर्षि का जो ईश्वर के विषय में चिंतन है वह सारी भ्रान्तियों को दूर कर देता है। अब अपने मूल विषय पर आते हैं।

उपादान कारण—जिसके बिना कुछ न बने, वही अवस्थान्तर रूप होके बने और बिगड़े भी। प्रकृति-परमाणु जिसको सब संसार को बनाने की सामग्री कहते हैं। प्रकृति जड़ होने से आप बन और बिगड़ नहीं सकती, कहीं-कहीं जड़ के निमित्त से जड़ भी बन बिगड़ जाता है। जैसे परमेश्वर से रचित बीज पृथिवी पर गिरकर वृक्षाकार हो जाते हैं और अग्नि आदि के संयोग से बिगड़ भी जाते हैं। परन्तु इसका नियम पूर्वक बनना और बिगड़ना परमेश्वर और जीव के अधीन है। समस्त ब्रह्माण्ड का संचालन, ईश्वर

शेष पृष्ठ 7 पर....

छद्मवेशधारी सेवक की करतूत

आर्यसमाज श्रेष्ठ व्यक्तियों की संस्था है। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज का निर्माण समाज में व्याप्त अन्याय, अभाव, अन्धकार, अन्धविश्वास और ढोंग, पाखण्ड का उन्मूलन हेतु किया था। जो भी व्यक्ति आर्यसमाज से जुड़ा उसका जीवन बदला तथा वह आजीवन आर्यसमाज के नियमों और उद्देश्यों का पालन करते हुए समाज में महर्षि का संदेश फैलाता रहा। चूंकि आर्यसमाज से जुड़ने वाला व्यक्ति निष्कपट होता है तथा उसकी सज्जनता का अनुचित लाभ उठाने हेतु कुछ शातिर लोग सेवक या पुरोहित का स्वांग रचकर गरीब, असहाय बनकर किसी बहाने से आर्यसमाजों में शरण ले लेते हैं। आर्यसमाज में घुस जाने पर उनका बनावटी चौगा उतर जाता है तथा उनका असली रूप प्रकट होता है। स्वार्थ में सराबोर ये ढोंगी समाज भवन पर अपना अधिकार समझ लेते हैं तथा पदाधिकारियों की बुराइयाँ करते हैं।

आर्यसमाज नई सब्जी मण्डी रेवाड़ी में वर्तमान में ऐसी ही स्थिति बनी हुई है। 10-11 माह पूर्व हरीश वेदी नाम का छद्म व्यक्ति आर्यसमाज के सत्संग में कई बार आया तथा सेवक पुरोहित के रूप में नौकरी हेतु पदाधिकारियों से मिला। आर्यसमाज मन्दिर को साधु-संन्यासियों के लिए खुला रखना था। अत: हरीश वेदी की गरीबी तथा बेकारी को देखते हुए उसे एक कोठरी देते हुए रख लिया। कुछ माह तक वह अकेला रहा। किसी को पता नहीं कि वह कहाँ से आया है, उसका कितना परिवार है, उसका आचरण-व्यवहार कैसा है? योजना इतनी गुप्त बनी कि हरीश वेदी का साला ईश्वरसिंह आर्यसमाज में आता रहा तथा दोनों ने समाज सदस्यों को यह भेद नहीं दिया कि वे जीजा-साले हैं। कुछ समय बाद हरीश वेदी अपने बड़े परिवार सहित आर्यसमाज के सभी तीन कक्षों तथा बरामदे में रहने लग गया। अब साधु-संन्यासी के ठहरने का स्थान नहीं रहा। योजनाबद्ध तरीके से हरीश वेदी ने वेतन तीन हजार रुपये चैक द्वारा ही मांगा तथा उनकी फोटो कापियां रखने लगा। मोहल्ले वालों को बरगलाना शुरू किया तथा अपनी मर्जी मुताबिक अपने रिश्तेदारों को आर्यसमाज का सदस्य बनाना शुरू किया।

उपरोक्त गतिविधियों से पदाधिकारियों को कुछ संकेत मिलने लगे तथा हरीश वेदी प्रधान का आर्यसमाज सम्बन्धी कार्यों के आदेश मानने से इंकार कर दिया। अब वह अपने असली रूप में आ गया तथा समाज के सदस्यों में भी गुटबाजी करने लगा। अब आगे आर्यसमाज को ऐसे सेवक की आवश्यकता नहीं थी। अत: 30.6.13 को सभी सदस्यों की मीटिंग बुलाकर उसे नौकरी से हटाते हुए आर्यसमाज भवन को खाली करने हेतु कहा गया। हरीश ने स्पष्ट मना कर दिया कि भवन खाली नहीं करूँगा। हमने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक को फोन किया तथा लिखित भी दिया। हमने सलाह एवं सहायता हेतु पुलिस से सम्पर्क किया तो ज्ञात हुआ कि हरीश ने पहले ही डी.सी. तथा एस.पी. को आर्यसमाज के पदाधिकारियों के खिलाफ रिपोर्ट दे रखी है। आर्यसमाज के दस-बारह व्यक्ति भी डी.सी. तथा एस.पी. से मिले, जहाँ से कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। सभी सदस्य तथा पदाधिकारी इस समस्या के समाधान हेतु विचार विमर्श कर ही रहे थे कि हरीश वेदी ने कोर्ट में आर्यसमाज का संरक्षक प्रधान तथा मन्त्री के खिलाफ आर्यसमाज से निकालने का दावा कर दिया जिसकी पहली पेशी 30.7.13 थी।

हम आर्यसमाज की छवि धुमिल न होने देने के लिए कोर्ट-कचहरी में न जाकर आपसी संवाद से समस्या का समाधान चाह रहे थे, परन्तु एक भेड़िया, भेड़ के वेश में छिपकर आर्यसमाज जैसी पवित्र और परोपकारी वैदिक संस्था में योजनाबद्ध तरीके से अधिकार जमायेगा, हमें ज्ञात नहीं था। 10-12 माह में ही हरीश ने अपना असली रूप दिखाकर यह स्पष्ट कर दिया कि वह गरीब, असहाय, लाचार बनकर किसी प्रकार आर्यसमाज मन्दिर में घुसना चाहता था।

आर्यसमाज के समस्त सदस्यों, पदाधिकारियों, संस्थाओं से हमारा अनुरोध है कि रेवाड़ी की ऐतिहासिक आर्यसमाज को इस ढोंगी से मुक्त कराने का हमारा सहयोग करें तथा हरीश वेदी (वेदी लिखते हुए भी शर्म आती है) जैसे भेड़िये से आर्यसमाज की संस्थाओं को बचाकर रखें। न जाने कब गरीब का स्वांग भरकर अधिकार जमा बैठे। हरीश पूर्व में फिरोजपुर (पंजाब) तथा दिल्ली में भी किसी स्थान पर रहा है।

हम सभी आर्यबन्धुओं से आग्रह करते हैं कि वे हरीश की पीछे की अपनी जान-पहचान से खोज करें तथा उसकी वास्तविकता का पता लगावें। वहा कहाँ-कहाँ रहा? वहाँ से कैसे निकाला गया? वह अपने आपको पण्डित कहता है जबकि वह दर्जी (छीपी) है वह यह स्वांग इसलिए भर रहा है कि मन्दिरों के पुजारी उसे पण्डित समझ सहायता करेंगे। वह अपने आपको पुजारी भी बताता है। पुजारी का स्थान सबसे ऊपर होता है। उसे कोई नहीं हटा सकता। यह ढोंगी इतना भी नहीं समझता कि आर्यसमाज में पुजारी नहीं होता तथा सभी पदाधिकारी हवन-यज्ञ संस्कारादि कराना जानते हैं। **—देशराज आर्य,**

आर्यसमाज मन्दिर रेवाड़ी

भजन-1

टेक:—ये शरीर एक गाड़ी है, रखना तू इसे संभाल के,

1. पाँच ज्ञान और पाँच कर्म, ये तेरी गाड़ी के घोड़े हैं,
दशों नियम में बंधे हुए, कुदरत ने ऐसे जोड़े हैं,
जिसने जैसे दौड़ाए, वे वैसे दौड़े हैं,
आकृति हैं न्यारी न्यारी न्यारे न्यारे नाम हैं,
काम भी हैं न्यारे न्यारे करते तमाम हैं,
रोकने से रुक जाते गर मुँह में लगाम है,
ये दुनिया टेढो खाडो है खाडो से रखना टाल के ।।१।।

2. आँखें दी हैं देखण की खातिर, तकणा ठीक नहीं होता,
जीभ दी चखणे की खातिर, छकणा ठीक नहीं होता,
बोल्या जा तो शुद्ध बोल, बकना ठीक नहीं होता,
हाथ पांव हिलें डुलें, थकना ठीक नहीं होता,
कानों से सुन अच्छी बातें ढकणा ठीक नहीं होता,
पाखाने और मल-मूत्र को, रखना ठीक नहीं होता,
ये दुर्गन्ध बहुत ही माड़ी है सूंघले फूल गुलाब की डाली, ।।२।।

3. मन की लगाम नहीं तो घोड़े एक्सीडेंट करें,
इसमें बिल्कुल झूठ नहीं सेन्ट परसेन्ट करें,
पास्ट नहीं फ्यूचर नहीं तो परजेन्ट करें,
बुद्धि गाड़ीवान् है तो काम अरजेन्ट करे,
मन को बस में कर लेती ना बिल्कुल कोमेंट करे,
आगे आगे रहते घोड़े जैसे सरवेन्ट फिरे,
पर मन बहुत अनाड़ी है मुश्किल निकलेगा जाल से ।। ३।।

4. शरीररूपी गाड़ी को तू मैल से बचाता रहिए,
वेदों का ले ज्ञान ध्यान बुद्धि को बढाता रहिए,
सत्य बोल-बोल कर मन को तपाता रहिए,
धर्म के हैं दश लक्षण इनको धारण करना है,
भवसागर में पड़ा हुआ इससे पार उतरना है,
कहे '**रायसिंह**' एक दिन उस ईश्वर के शरणा है,
चलता धर्म अगाड़ी है जब घिर जाता है काल से,
ये शरीर एक गाड़ी है रखना तू इसे संभाल के।।४।।

—रायसिंह आर्य, गांव-डा० घोघड़िया, जिला जीन्द (हरयाणा)

वेदप्रचार कार्यक्रम का आयोजन

आर्यसमाज राखी खास, जिला हिसार में स्वामी ब्रह्मपुत्र जी के सान्निध्य में दिनांक 6 से 8 अक्तूबर 2013 तक वेदप्रचार कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में तप:पूत, त्यागमूर्ति आचार्य बलदेव जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, आचार्य आत्मप्रकाश जी, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, आचार्य अभय जी, अजय सिंधु जी एवं श्री बदलूराम आर्य प्रधान आर्यसमाज नागौरी गेट हिसार तथा पं० रामनिवास आर्य पानीपत सहित अनेक गणमान्य आर्यपुरुष पधार रहे हैं। आप से अनुरोध है कि इस कार्यक्रम में पधार कर धर्मलाभ उठावें।

—सुभाष आर्य, आर्यसमाज राखी खास, जिला हिसार

www.thearyasamaj.org

वेद न पढ़ने से बच्चों का पतन

-: वेद-मन्त्र :-

यदस्याः कस्मैचिद्भोगाय बालान्कश्चित्प्रकृन्तति।
ततः किशोरा म्रियते वत्सांश्च घातुको वृकः॥

(अथर्व० 12.4.7)

अर्थ—(यत् कश्चित्) कोई व्यक्ति जब (कस्मैचिद् भोगाय) किसी भोग की कामना के लिये (अस्याः बालान् प्रकृन्तति) इस वेदवाणी के केश अर्थात् बलों को कतर देता है (ततः) तब इस कुकृत्य से (किशोराः) यौवन की दहलीज पर आरूढ़ किशोर (म्रियते) पतित, आचार भ्रष्ट हो जाते हैं। (वृकः) भेड़िये के समान ऐसा व्यक्ति (वत्सान् घातुकः) अपने बच्चों का हत्यारा है।

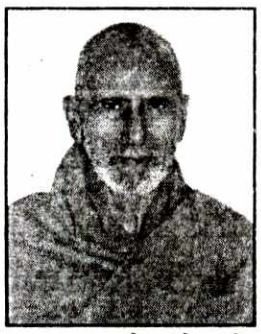

पूज्य आचार्य बलदेव जी

वेद आचार को बतलाने वाला ग्रन्थ है। मनुस्मृति कहती है—

वेदः स्मृति सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम्॥

(मनु० 2.12)

वेद, स्मृति, सज्जन पुरुषों का आचार और अपने आत्मा के अनुकूल सत्याचरण, ये चार धर्म के लक्षण अर्थात् इन्हीं से धर्माधर्म का निश्चय होता है।

बच्चों में अच्छे संस्कार डालने के लिये जब वे तीन वर्ष के हो जायें तभी से वेद के मन्त्र और सुभाषित उन्हें माता-पिता स्मरण करायें।

चरेदेवा त्रैहायणादविज्ञातगदा सती।
वशां च विद्यान्नारद ब्राह्मणास्तह्येष्याः॥ (अथर्व० 12.4.16)

इस सर्वगुण सुभूषित वेदवाणी को तीन वर्ष के बच्चों को कण्ठस्थ कराया जाए। इस कार्य के लिये सुयोग्य विद्वानों को नियुक्त करना चाहिये जो खेल-खेल में बच्चों को जीवनोपयोगी वेद के मन्त्र और सुभाषितों द्वारा उन्हें सदाचार की शिक्षा दे। अनुभव में यह आया है कि बाल्यकाल में जो बात बच्चों को कविता या गीत के माध्यम से कण्ठस्थ करा दी जाती है वह जीवन भर स्मृति में बनी रहती है। जैसे आजकल छोटे बच्चों को आंगनवाड़ी या नर्सरी की कक्षा में भेजते हैं वैसे ही वैदिक नर्सरी की कक्षाएँ चलाई जाएँ। महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय समुल्लास में लिखते हैं—"जब पाँच वर्ष का लड़का या लड़की हो तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास कराएँ। अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी। उसके पश्चात् जिनसे अच्छी शिक्षा, विद्या, धर्म, परमेश्वर, माता-पिता, आचार्य, अतिथि, राजा, प्रजा, कुटुम्ब, भगिनी, भृत्य आदि से कैसे वर्त्तना इन बातों के मन्त्र, श्लोक, सूत्र, गद्य, पद्य भी अर्थ सहित कण्ठस्थ करावें।"

योऽनधीत्य वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः॥ (मनु० 2.168)

जो वेद को न पढ़ के अन्यत्र श्रम किया करता है वह अपने पुत्र पौत्र सहित शूद्रभाव को शीघ्र ही प्राप्त हो जाता है।

भगवती वेदवाणी सावधान करती हुई कह रही है—जो सांसारिक भोग, धनार्जन एवं सुख-सुविधा के लिए अपने बालकों को वेदाध्ययन से हटाकर अन्यत्र लगा देता है **'ततः किशोरा म्रियन्ते'** तब आचार एवं तप से रहित हो जाने के कारण कुमारावस्था अर्थात् युवा होने से पहले ही वे युवक विषयों में फँसकर जवानी को लुटा देते हैं और युवावस्था आने से पह ले ही बूढ़े दिखाई देने लगते हैं। कितने ही मद्यपान, वेश्यागमन आदि में फँसकर असमय में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं।

जैसे भेड़िया छोटे बछड़ों और मेमनों को उठाकर ले जाता और उन्हें मौत के घाट उतार देता है। ऐसे ही वह माता-पिता उसी के समान हैं, जो अपने बच्चों को वेदज्ञान से वंचित रख फैशन, नाच-गान और तप के स्थान पर आराम के साधन उपलब्ध कराने में प्रसन्न हो रहे हैं। इसलिये वे बच्चों के अभिभावक, संरक्षक के स्थान पर भेड़िये के समान घातक ही जानने चाहियें।

—आचार्य बलदेव

ब्रह्म-ज्ञान

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

गार्गी ने कहा—हे याज्ञवल्क्य! यह 'पृथिवी' 'जल' में ओतप्रोत है। जल ही इस पृथिवी पर छा रहा है, अब तुम बताओ यह जल किस में ओतप्रोत है? याज्ञवल्क्य ने कहा—'वायु' में। इसी विषय में गार्गी ने आगे प्रश्न किया व याज्ञवल्क्य उत्तर देते गए। 'वायु' किसमें ओतप्रोत है? 'अन्तरिक्ष लोकों' में। 'अन्तरिक्ष लोक' किस में ओतप्रोत है? 'गन्धर्व लोकों' में। 'गन्धर्व लोक' किस में ओतप्रोत है? 'आदित्य लोकों' में। 'आदित्य लोक' किस में ओतप्रोत है? 'चन्द्र लोकों' में। 'चन्द्र लोक' किस में ओतप्रोत है? 'नक्षत्र लोकों' में। 'नक्षत्र लोक' किस में ओतप्रोत है? 'देव-लोकों' में। 'देव-लोक' लोक किस में ओतप्रोत है? 'प्रजापति लोकों' में। 'प्रजापति लोक' किस में ओतप्रोत है? हे याज्ञवल्क्य! यह बताओ कि जैसे अनेक मनके एक सूत्र में पिरोये होते हैं और तभी माला रह सकती है, इसी प्रकार यह लोक-लोकान्तर किस सूत्र में पिरोये गये हैं? याज्ञवल्क्य ने कहा, हे गार्गी! **'ब्रह्मलोक'** में।

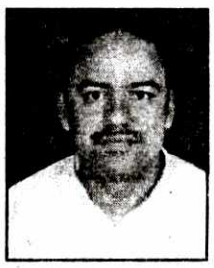

यह है उपनिषद् का ब्रह्मज्ञान। उपनिषद् का ब्रह्मज्ञान, जिसे समस्त दुनिया के बुद्धिजीवी अति श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं। ऐसा आध्यात्मिक ज्ञान जो विज्ञान, बुद्धि, तर्क की कसौटी पर खरा उतरता है। लेकिन रामपाल दास का तत्त्वज्ञान देखिए, हिन्दी साहित्य के मध्यकाल के 'खिचड़ी भाषा' के कवि कबीरदास को संसार के मूल में बैठा दिया है।

विदग्ध के प्रश्नों के उत्तर में याज्ञवल्क्य ने यही कहा था कि प्राण, पृथिवी, जल, प्रजा आदि में ब्रह्म प्रकट तो हो रहा है, लेकिन ये ब्रह्म नहीं हैं, ब्रह्म तो इनसे बहुत अधिक है। गौतम को याज्ञवल्क्य ऋषि ने बताया था—वह परमात्मा पृथिवी, जल, अग्नि, अन्तरिक्ष, वायु, द्यु, आदित्य, दिशाओं, आकाश, तम, तेज में रहता हुआ भी इनसे अलग है। ऋषियों की इसी वर्णन शैली को न समझकर रामपालदास जैसे स्वयं के मुँहबोले तत्त्वज्ञानी ब्रह्म को अनेक समझ बैठते हैं या मायाजाल द्वारा अपने अनुयायियों को यह मिथ्या ज्ञान परोसते हैं। ऋषियों को प्रकरणवित् इसीलिए कहा गया कि वे प्रकरण के अनुसार ही उसके विभिन्न नामों की व्याख्या करते थे। इस विषय पर प्रश्न-उत्तर, जिज्ञासा-समाधान भी होते थे। जैसे कोई तत्त्ववेत्ता किसी से पूछे सूर्य की सात किरणों में वह आठवां कौन है तथा उसका क्या नाम है? प्रकरणवित् ने उत्तर दिया—वह आठवां ब्रह्म है तथा उसका नाम 'पोता' है। 'पोता' कहते हैं शुद्ध करने वाला। इन विषयों को न समझकर अनेक ब्रह्म मानने वाले रामपालदास जैसे तत्त्ववेत्ता पूर्व में भी आध्यात्मिक ज्ञान से खिलवाड़ करके अपने अनुयायियों के लिए प्रकाश द्वार बन्द करते आए हैं। थोड़ा रामपालदास इनसे अलग इसीलिए हैं कि इसके अनुयायी इसे पूर्ण परमात्मा मानते हैं।

'ब्रह्म-ज्ञान' के बारे में क्या कहें? जब ऋषि ही 'नेति-नेति' कहकर चले गए। कठोपनिषद् का ऋषि कहता है—

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपाꣳसि सर्वाणि च यद्वदन्ति।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदꣳसंग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्॥

जिस पद का सब वेद बार-बार वर्णन करते हैं, सब तप जिसको पुकारते हैं, जिसकी चाहना में ब्रह्मचर्य का आचरण करते हैं, संक्षेप में वह शब्द, तुम्हें बतलाता हूँ—वह शब्द है-**'ओ३म्'** यह है।

यह रामपालदास अपने अनुयायियों को इसी 'ओ३म्' नाम से, ध्यान से, उपासना से वञ्चित करता है। सत्य शास्त्रों से मनमानी खिलवाड़ करता है। पाठकगण! यदि मनु से लेकर भोज जैसे राजा आज होते तो क्या इसकी जिह्वा का छेदन न करवा देते?

भजनोपदेशकों के लिए सभा से सम्पर्क करें—

प्रदेश की सभी आर्यसमाजें अपने आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव या अन्य विशेष कार्यक्रमों के लिए भजनोपदेशकों के प्रोग्राम सुनिश्चित करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से एक मास पूर्व पत्र द्वारा सम्पर्क करें।

—सभामन्त्री

www.thearyasamaj.org

ओं भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ (यजु० अ० 36/मं०3)

व्याख्यान—(ओ३म्) यह परमेश्वर का मुख्य या सब नामों में उत्तम नाम है। जैसा पिता पुत्र का प्रेम सम्बन्ध है, वैसे ही ओंकार के साथ परमात्मा का सम्बन्ध है। इस एक नाम से ईश्वर के सब नामों का बोध होता है या इस एक नाम के साथ अन्य सब नाम लग जाते हैं। जैसे आकार से विराट्, अग्नि आदि, उकार से हिरण्यगर्भ, वायु आदि, मकार से ईश्वर, आदित्यादि। (भूः) जो सब जगत् के जीवन का आधार, प्राण से प्रिय और स्वयम्भू है (भुवः) जो सब दुःखों से रहित तथा मुक्ति की इच्छा करने वालो, मुक्तों और अपने सेवक धर्मात्माओं को सब दुःखों से अलग करके सर्वदा सुख में रखता है (स्वः) जो स्वयं सुखस्वरूप और अपने उपासकों को सब सुखों की प्राप्ति कराने वाला है, जो नानाविध जगत् में व्यापक होके सब का धारण करता है, नियम में रखता है और सबके ठहरने का स्थान है।

उस (सवितुः) सब जगत् की उत्पत्ति करने वाले सूर्यादि प्रकाशकों के भी प्रकाशक सम्पूर्ण ऐश्वर्य से युक्त स्वामी व समग्र ऐश्वर्य के दाता (देवस्य) सबके चाहने योग्य, शुद्ध स्वरूप, सर्वत्र विजय कराने वाले परमात्मा का जो (वरेण्यम्) अतिश्रेष्ठ या अत्युत्तम ग्रहण या स्वीकार करने योग्य प्राप्त होने योग्य और ध्यान करने योग्य (भर्गः) सब क्लेशों, दुःखों, दोषों या दुःखमूलक पापों को भस्म करने वाला व पवित्र करने वाला शुद्ध विज्ञानस्वरूप या चेतन ब्रह्मस्वरूप है (तत्) उस इन्द्रियों से न ग्रहण करने योग्य परोक्ष को हम लोग (धीमहि) धारण करें व उसका ध्यान करें किस प्रयोजन के लिए कि (यः) जो सविता देव परमात्मा हमारी (धियः) बुद्धियों को (प्रचोदयात्) उत्तम गुण, कर्म, स्वभावों में प्रेरणा करे अर्थात् बुरे कामों से छुड़ाकर अच्छे-अच्छे कामों में सदा प्रवृत्त करें। (संस्कारविधि+वेदभाष्य+पंचमहायज्ञविधि+सत्यार्थप्रकाश)

इसी प्रयोजन के लिये इस जगदीश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करना और इससे भिन्न किसी को उपास्य इष्टदेव उसके तुल्य वा उससे अधिक नहीं मानना चाहिये। (संस्कारविधि वेदारम्भः)

इसलिए सब लोगों को चाहिए कि सच्चिदानन्द स्वरूप, नित्यज्ञानी, नित्यमुक्त, अजन्मा, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, व्यापक, कृपालु, सब जगत् के जनक और धारण करने हारे परमेश्वर ही की सदा उपासना करें कि जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जो मनुष्य देहरूप वृक्ष के चार फल हैं, वे उसकी भक्ति और कृपा से सर्वथा मनुष्यों को प्राप्त हों। (पंचमहायज्ञविधि)

हे मनुष्यो! जो सब समर्थों में समर्थ, सच्चिदानन्दानन्तस्वरूप, नित्य शुद्ध, नित्य बुद्ध, नित्य मुक्त स्वभाववाला, कृपासागर, ठीक-ठीक न्याय करने हारा, जन्म-मरणादि क्लेशरहित, आकाररहित, सबके घट-घट का जानने वाला, सबका भर्त्ता, पिता, उत्पादक, अन्नादि से विश्व का पोषण करने हारा, सकल ऐश्वर्ययुक्त जगत् का निर्माता, शुद्धस्वरूप और जो प्राप्ति की कामना करने योग्य है, उस परमात्मा का जो शुद्ध चेतन स्वरूप है, उसी को हम धारण करें। इस प्रयोजन के लिए कि वह हमारे आत्मा और बुद्धियों का अन्तर्यामी स्वरूप हमको दुष्टाचार अधर्मयुक्त मार्ग से हटाके श्रेष्ठाचार सत्यमार्ग में चलावे, उसको छोड़कर दूसरे किसी वस्तु का ध्यान हम लोग नहीं करें, क्योंकि न कोई उसके तुल्य और न अधिक है, वही हमारा पिता, राजा, न्यायाधीश और सब सुखों का देनेहारा है। (सत्यार्थप्रकाश, तृतीय समुल्लास)

भावार्थ-1

जो मनुष्य कर्म, उपासना और ज्ञान सम्बन्धिनी विद्याओं का सम्यक् ग्रहण कर और सम्पूर्ण ऐश्वर्य से युक्त परमात्मा के साथ अपने आत्मा को युक्त करते हैं तथा अधर्म, अनैश्वर्य व दुःखरूप मलों को छुड़ा के धर्म, ऐश्वर्य और सुखों को प्राप्त होते हैं उनको अन्तर्यामी जगदीश्वर आप ही धर्म के अनुष्ठान और अधर्म का त्याग कराने को सदैव चाहता है।

(ऋ०दया०कृत यजुर्वेदभाष्य अ० 36/मं०3)

भावार्थ-2

सब मनुष्यों को चाहिए कि सच्चिदानन्दस्वरूप नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्तस्वभाव सब के अन्तर्यामी परमात्मा को छोड़ के उसकी जगह में अन्य किसी पदार्थ की उपासना का स्थापन कभी न करें, किस प्रयोजन के लिए कि जो हम लोगों से उपासना किया हुआ परमात्मा हमारी बुद्धियों को अधर्म के आचरण से छुड़ा के धर्म के आचरण में प्रवृत्त करें, जिससे शुद्ध हुए हम लोग उस परमात्मा का प्राप्त होकर इस लोक और परलोक के सुखों को भोगें इस प्रयोजन के लिये।

(ऋ०दया०कृत यजुर्वेदभाष्य अ० 22/मं०9)

भावार्थ-3

इस मन्त्र में वाचक लुप्तोपमालंकार है। जैसे परमेश्वर जीवों को अशुभाचरण से अलग कर शुभ आचरण में प्रवृत्त करता है वैसे राजा भी करे। जैसे परमेश्वर में पितृभाव करते अर्थात् उसको पिता मानते हैं वैसे राजा को भी मानें जैसे परमेश्वर जीवों में पुत्रभाव का आचरण करता है वैसे राजा भी प्रजाओं में पुत्रवत् वर्ते। जैसे परमेश्वर सब दोष, क्लेश और अन्यायों से निवृत्त है वैसे राजा भी होवे। (ऋ०दया०कृत यजुर्वेदभाष्य अ० 30/मं०2)

भावार्थ-4

मनुष्य सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता, सबसे उत्तम, सब दोषों को नष्ट करने वाले, शुद्ध स्वरूप परमेश्वर की उपासना नित्य करें। किस प्रयोजन के लिये? इसके उत्तर में वेद कहता है—स्तुति, धारणा, प्रार्थना और उपासना किया हुआ वह परमेश्वर हमें सब दुष्ट गुण, कर्म, स्वभावों से पृथक् करके सब श्रेष्ठ, गुण, कर्म, स्वभावों में सदा प्रवृत्त रखे, इसलिए परमेश्वर की स्तुति आदि करना योग्य है। प्रार्थना का यही मुख्य सिद्धान्त है कि जैसी प्रार्थना करें वैसा ही कर्म (आचरण) भी करें। (ऋ०दया०कृत यजुर्वेदभाष्य अ० 3/मं०35)

संकलन व संपादन : **स्वामी ध्रुवदेव जी परिव्राजक (उपाध्याय)**
दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन रोजड़, पत्रा.-सागपुर, जिला साबरकांठा
गुजरात-383307 फोन : 02770-287418, 287518

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में बिक्री हेतु निम्न साहित्य उपलब्ध हैं। कृपया इसका लाभ उठावें।

क्र०	पुस्तक का नाम		मूल्य
1.	प्रो० शेरसिंह : एक प्रेरक व्यक्तित्व	—	20-00
2.	धर्म-प्रवेशिका	—	10-00
3.	धर्म-भूषण	—	12-00
4.	वैदिक सिद्धान्त सार	—	20-00
5.	सत्यार्थप्रकाश	—	30-00
6.	वैदिक उपासना पद्धति	—	8-00
7.	पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जीवन चरित	—	10-00
8.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	—	50-00
9.	संस्कारविधि	—	30-00
10.	हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान	—	30-00
11.	पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जीवन चरित	—	25-00
12.	महर्षि दयानन्द तथा वेदों पर आक्षेपों का उत्तर	—	15-00
13.	आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो?	—	10-00
14.	पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन	—	100-00
15.	स्मारिका-2002	—	10-00
16.	प्राणायाम का महत्त्व	—	15-00
17.	महाराणा प्रताप तथा उनके वंशज	—	10-50
18.	स्मारिका 1987	—	10-00
19.	स्मारिका 1976	—	10-00
20.	अमर हुतात्मा भगत फूलसिंह जीवनी	—	15-00
21.	अमर शहीद पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' जीवनी	—	30-00
22.	स्वामी श्रद्धानन्द जीवनी (कल्याण मार्ग का पथिक)	—	80-00

—वानप्रस्थी अत्तरसिंह स्नेही, सभा पुस्तकाध्यक्ष

शोक-समाचार

आर्यसमाज जाडरा जिला रेवाड़ी के संरक्षक श्री बनवारीलाल का दिनांक 14 अगस्त 2013 को हृदयगति रुकने से निधन हो गया। उनकी आयु 75 वर्ष थी। वे आर्यसमाज व गऊशाला में दान दिया करते थे। वे साप्ताहिक यज्ञ में भाग लेते थे। वे अपने पीछे चार लड़कियों को छोड़ गए। उनके निधन से आर्यसमाज जाडरा को अपूरणीय क्षति हुई है। हम दुःख की घड़ी में परमात्मा से कामना करते हैं कि उनके परिवार को इस अचानक आए कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—हरिरामार्य, पूर्वमंत्री आर्यसमाज जाडरा जिला रेवाड़ी

www.thearyasamaj.org

सुखी जीवन के लिए वेदप्रचार करो

❑ पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य चलभाष : 9813845774

हमारे प्यारे देश आर्यावर्त (भारत) को सारा संसार अपना गुरु मानता था। संसार के नर-नारी परमपिता परमात्मा से प्रात: उठकर प्रार्थना करते थे कि हे परमपूज्य परमेश्वर आप हमें ऋषियों की पावन भूमि आर्यावर्त (भारत) में अगला जन्म प्रदान करना जिससे हम ऋषियों-मुनियों, वैदिक विद्वानों के पावन चरणों में बैठकर वेदों की पावन शिक्षा प्राप्त करके अपने जीवन को सफल बना सकें।

उस समय वस्तुत: सम्पूर्ण भारत में वेदशास्त्रों एवं सद्ग्रन्थों का पठन-पाठन था। सारे देश में गुरुकुलीय शिक्षा-प्रणाली लागू थी। गरीब-अमीर, राजा-रंक, सबल-निर्बल सभी के बालक-बालिकाएँ गुरुकुलों में शिक्षा ग्रहण करते थे। सबका खान-पान, रहन-सहन समान था। उस समय ऊँच-नीच, जाति-पाति का भेदभाव नहीं था। कर्मों के अनुसार, योग्यता के अनुसार काम एवं पद दिए जाते थे। आर्यावर्त के नर-नारी वेदप्रचार करने सकल विश्व में जाते थे। यहाँ सर्वत्र सुख-शान्ति का साम्राज्य था।

वेदों का पठन-पाठन त्यागने के कारण इस समय भारत की भारी दुर्दशा हो रही है। यहाँ के नर-नारी विदेशियों की नक्ल करने में लगे हुए हैं। इस समय भारतवासी भौतिकता की चकाचौंध एवं कुशिक्षा के कारण अविद्या-अंधेरे में भटक रहे हैं। देश के युवक-युवतियां पश्चिमी देशों की नक्ल कर रहे हैं। खान-पान-पहरान बिगड़ता जा रहा है। डाकू, गुण्डे, चोर, लुटेरों का जोर होता जा रहा है। उग्रवादी, आतंकवादी, अत्याचारी लोग शरीफ नर-नारियों की हत्याएँ कर रहे हैं। सारा देश इस समय आतंकित है।

समाचार-पत्रों, रेडियो, टेलीविजन पर गन्दे-गन्दे कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं, जिन्हें देखकर युवक-युवतियां उद्दण्ड, आवारा, आतंकवादी, डाकू, चोर, नशेबाज बन रहे हैं। समाचार-पत्रों में लूट-खसोट, मार-धाड़, हत्या की खबरें मुख्य पृष्ठों पर पढ़ने को मिलती हैं। हमारे देश में नारीजाति को पूज्य माना जाता था किन्तु अब कोई दिन-रात ऐसा नहीं जब अपहरण, बलात्कार की दु:खद घटना न होती हो।

पं. नन्दलाल निर्भय

भारत के राजनेता वोटों के लालच में, बदमाश हत्यारे व्यक्तियों को बढ़ावा दे रहे हैं। धर्म निरपेक्षता की आड़ में विधर्मी लोगों को गुण्डागर्दी करने की खुली छूट दे रहे हैं। इन अवसरवादी कुर्सी के दास बगुलाभक्तों को देश-धर्म-मानवता से बिल्कुल प्यार नहीं है। ऐसे व्यक्ति रात-दिन बदमाशी कर रहे हैं। भारत की सर्वोच्च न्यायालय ने अपराधी व्यक्तियों पर चुनाव न लड़ने की पाबन्दी लगाकर सराहनीय निर्णय निर्णय दिया है। आशा है इससे देशद्रोही लोगों पर शिकंजा कस जाएगा तथा देश में कुछ सुधार हो जाएगा।

इस समय भारत में धर्मगुरुओं की बाढ़ आई हुई है जो धर्म के नाम पर भोली-भाली जनता को भ्रमित करके आपस में लड़ा रहे हैं। ये स्वार्थी धन के भूखे भेड़िये ईश्वर के स्थान पर अपनी पूजा अर्चना करा रहे हैं। वेदों के स्थान पर गुरुडम, पाखण्ड का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। कई तथाकथित धर्मगुरु हत्या, बलात्कार के मामलों में दोषी पाए गए हैं। भारत की जनता को इन ढोंगी, बेईमान लोगों के चंगुल से निकालने की विशेष आवश्यकता है अन्यथा ये धूर्त देश का बेड़ा गर्क कर देंगे।

महर्षि दयानन्द महाराज ने **'वेदों की ओर लौटो'** का उद्घोष करके सकल संसार का भला किया था। स्वामी जी ने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान बताया था।

उन्होंने कर्म प्रधानता का सिद्धान्त संसार के सामने रखा था। वैदिक सभ्यता-संस्कृति को सर्वश्रेष्ठ बताया था। महर्षि ने आर्यसमाज की स्थापना करके वेदप्रचार करने के लिए हम सबको प्रेरित किया था। खेद का विषय है कि 'हम आर्य-समाजी भी धन-दौलत, पदों के चक्कर में आपस में लड़ रहे हैं फिर संसार को आर्य कौन बनाएगा?' इसलिए आर्यवीरो! महर्षि देव दयानन्द की शिक्षाओं को अपनाओ अन्यथा मिट जाओगे।

उठो आर्यों! कदम बढ़ाओ,
वेदों का प्रचार करो।
दुर्गुण त्यागो, सद्गुण धारो,
अविद्यारूपी तिमिर हरो॥
पंडित लेखराम बन जाओ,
स्वामी श्रद्धानन्द बनो।
मुनिवर गुरुदत्त बन जाओ,
आचार्य हरिश्चन्द्र बनो॥
बिना तुम्हारे सोए जग को,
बोलो कौन जगाएगा?
वेदज्ञान की पावन गंगा,
जग में कौन बहाएगा?॥
अगर नहीं जागोगे वीरो,
तुम नासमझ कहाओगे।
हँसी उड़ाएगा सारा जग,
फिर पीछे पछताओगे॥

अत: आर्यवीरो! समय का मूल्य समझो और अपना परम कर्त्तव्य समझते हुए वेदप्रचार में ईमानदारी से जुट जाओ। याद रखो! यह धन-दौलत, कुटुम्ब-कबीला साथ नहीं जाएगा। अन्त में मैं एक ही बात कहता हूँ, मानोगे तो सुख मिलेगा।

जगद्गुरु दयानन्द का,
है भारी एहसान।
मानो ऋषि की बात तुम,
यदि चाहो कल्याण॥
करो परस्पर मेल तुम,
करो परस्पर प्रीत।
रखो पूर्ण विश्वास तुम,
जग को लोगे जीत॥

संपर्क-आर्य सदन, बहीन,
जनपद-पलवल (हरयाणा)

शिविर सूचना

सरल आध्यात्मिक शिविर का आयोजन

दिनांक 28 अक्तूबर से 1 नवम्बर, 2013 तक

स्थान : गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत (रोहतक)

अध्यक्षता : **स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक** (रोजड़ वाले)

आशीर्वचन : **पूज्यपाद आचार्य बलदेव जी**

शिविर में भाग लेने वाले साधक को पंजीकरण करवाना अनिवार्य है तथा शिविर शुल्क 500/- रुपये देय होगा। शिविर में भाग लेने वाले महानुभाव 27.10.13 की सायं तक पहुँचें।

निवेदक : प्रधान आर्यसमाज सैक्टर-1, रोहतक

सम्पर्क सूत्र : 9355674547, 9466008120, 9215676662

आर्यसमाज पटेलनगर, सैक्टर-15 पार्ट-2 का उत्सव सम्पन्न

गुड़गांव। आर्यसमाज पटेल नगर सैक्टर-15 पार्ट-2 के आयोजन में श्रावणी एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर 19 से 28 अगस्त 2013 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें लोगों को आमंत्रित करने के लिए 18 अगस्त को अल सुबह प्रभातफेरी निकाली। आर्यसमाज के प्रधान पदमचन्द आर्य, उपप्रधान भुवेश त्यागी, सचिव ईश्वर सिंह दहिया, कोषाध्यक्ष वेदप्रकाश मनचंदा ने 10 दिन तक चलने वाले इस कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि भरतपुर (राज०) के आचार्य देशराज शास्त्री, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के डॉ० योगेश तथा बरेली (उ०प्र०) के भजनोपदेशक विमलदेव के सान्निध्य में यह कार्यक्रम चला। पहले दिन 19 अगस्त को सैक्टर-15 भाग एक स्थित कम्युनिटी सैंटर में केन्द्रीय सभा के पूर्व अध्यक्ष मा० सोमनाथ की अध्यक्षता में यज्ञ, भजन, प्रवचन की शुरुआत की। दूसरे दिन इसी सेक्टर में ही 20 अगस्त को रि.मु.अ. ओमप्रकाश मनचंदा की देखरेख में ये कार्यक्रम चला। इसी प्रकार 21 अगस्त को सैक्टर-भाग दो स्थित सोनू ग्लास हाउस के निकट वाले पार्क में नरेन्द्रदेव कालड़ा और इसी पार्क में 22 अगस्त को रि. प्रिंसिपल व पूर्वमन्त्री की पत्नी सरला गाबा की अध्यक्षता में भजन-प्रवचन हुये। आर्यवीर दल उपसंचालक शिवदत्त आर्य 23 अगस्त के कार्यक्रम की अध्यक्षता की। पटेल नगर में 24 अगस्त को रोशनी देवी आर्या, 25 व 26 अगस्त को रामनगर भागदो में रि.एम.डी.एस.के. कपूर ने अध्यक्षता की।

उपमंत्री निर्मला आर्या आडिटर जयराम वर्मा ने बताया कि समापन समारोह 28 अगस्त को सैक्टर-15 भाग दो में होगा जिसकी अध्यक्षता प्रमुख दानी और पूर्व प्रधान रामदास सेवक द्वारा की। इसमें मुख्य अतिथि पूर्व मंत्री धर्मवीर गाबा, नगर पार्षद सुभाष सिंगला, श्रीराम ज्वैलर्स संचालक महेन्द्र किशोर गोयल, डॉ० अशोक तनेजा, उपप्रधान कन्हैयालाल आर्य सहित अनेक गणमान्य नेताओं ने समारोह को संबोधित किया।

—पदमचन्द आर्य, आर्यसमाज पटेल नगर, गुड़गांव

हिन्दू ध्यान दें

❑ कृष्णचन्द्र गर्ग, 831 सैक्टर 10 पंचकूला, हरियाणा 0172–4010679

1. वेदों की झूठी निन्दा - हिन्दू बिना पढ़े, बिना जाने वेदों पर मांसाहार, सुरापान, गोहत्या आदि के झूठे आरोप लगाते हैं। वेदों में ऐसी अनर्गल बातें नहीं हैं। वेदों में गाय आदि गुणकारी पशुओं की रक्षा के आदेश हैं, मदिरापान व मांसाहार आदि का निषेध है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है जो मानवमात्र के कल्याण के लिए है। वेदों में सभी मनुष्यों के लिए उत्तम-उत्तम उपदेश हैं, जन्म से मरण तक मनुष्यों को जीने का सही-सही ढंग बताया गया है।

2. श्री कृष्ण जी पर झूठे लांछन - महाभारत में श्री कृष्ण जी का जीवन बड़ा पवित्र बताया गया है। उन्होंने जन्म से मरण तक कोई भी बुरा काम किया हो ऐसा नहीं लिखा। परन्तु भागवत पुराण, ब्रह्मवैवर्त्त पुराण आदि में श्री कृष्ण जी पर दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी, कुब्जा दासी से सम्भोग, परस्त्रियों से रासलीला, क्रीड़ा आदि झूठे दोष लगाए हैं। गोपाल सहस्रनाम में श्री कृष्ण जी को चौरजारशिखामणि तक का तमगा दिया गया है जिसका अर्थ है चोरों और जारों का सरदार। ऐसी बातों को पढ़-पढ़ा, सुन-सुना के दूसरे मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं और हिन्दुओं का मज़ाक उड़ाते हैं।

हिन्दू श्री कृष्ण जी के महाभारत में वर्णित पवित्र जीवन चरित्र को क्यों नहीं अपनाते। वे सुदर्शनचक्रधारी, योगेश्वर, नीतिनिपुन, पाण्डवों को युद्ध में विजय दिलाने वाले, कंस, जरासंध जैसे दुष्ट पापाचारी राजाओं का वध करने वाले थे। वे एक पत्नीव्रती थे, उनकी पत्नी थी रुक्मणी। भागवत आदि पुराण महर्षि वेदव्यास की रचना नहीं हैं। ये बहुत बाद में बनाए गए ग्रन्थ हैं जो दुष्ट प्रवृति वाले लोगों ने रचे हैं। महर्षि वेदव्यास तो बहुत बड़े विद्वान, धार्मिक, सदाचारी और परोपकारी पुरुष थे।

3. धर्मस्थान या बूचड़खाने - हिन्दुओं के कुछ मन्दिरों में शराब, मुर्गे और बकरे चढ़ाए जाते हैं तथा देवियों को प्रसन्न करने के लिए बकरे व भैंसे तक काटे जाते हैं। ऐसी स्थिति में इन मन्दिरों और बूचड़खानों में क्या अन्तर रह गया है। हिन्दुओं को विचार करना चाहिए और ऐसे कुकर्मों को छोड़ देना चाहिए।

4. पाप कर्म को बढ़ावा - हिन्दू मानते हैं कि कुछ नदियों और तालाबों में नहाने से पाप छूट जाते हैं। इसका अर्थ है कि अपनी आम जिन्दगी में बेइमानी, बेइनसाफी आदि पाप कर्म करते रहो और बाद में गंगा आदि नदी में डुबकी लगालो तो उन पापकर्मों का बुरा फल न मिलेगा। यह कोरी अज्ञानता और अन्धविश्वास है। इस मानसिकता से पापकर्मों को बढ़ावा मिलता है। वास्तविक्ता तो यह है कि प्रत्येक मनुष्य को उसके अपने किए अच्छे बुरे कर्मों का फल अवश्यमेव भोगना पड़ता है। उनका फल भोगे बिना उन कार्यों से छुटकारा नहीं मिल सकता। यही ईश्वर की निष्पक्ष न्याय व्यवस्था है। उसके आगे किसी की सिफारिश या रिश्वत नहीं चलती।

5. शिवलिंग पूजा - शिव पुराण के अनुसार यह शिव और उसकी पत्नी के गुप्त अंगों की पूजा है। यह एक निरर्थक और घृणित कार्य है जो किसी भी सभ्य समाज में निंदित माना जाएगा। हिन्दुओं को इसे तुरन्त छोड़ देना चाहिए।

6. शिव के नाम पर भांग आदि पीना - शिवरात्रि वाले दिन बहुत से हिन्दू शिव के नाम पर गांजा, भांग, चरस आदि खाते पीते हैं। शिव नाम ईश्वर का है, क्योंकि वह सबका भला करता है। भांग पीने वाले किसी व्यक्ति का नाम भी शिव हो सकता है। इन नशीले पदार्थों के सेवन को धर्म से जोड़ना गलत है। नशीले पदार्थों का सेवन तो बुद्धि का, शरीर का और धन का नाश ही करता है। इसलिए इन से बचना ही समझदारी है। धर्म तो जीवन में पवित्रता और सात्विकता धारण करने का नाम है।

7. मन्दिरों में अश्लील मूर्तियां - खजुराहो, जगन्नाथपुरी के कोनार्क के मन्दिर, काशी में नेपाल महाराज का मन्दिर, मथुरा में गौकर्ण मन्दिर आदि हिन्दुओं के मन्दिरों में अश्लील मूर्तियां बनी हैं जिन्हें आम लोग देख सकते हैं। उन्हें देखकर बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ता है तथा धर्म के प्रति लोगों की क्या धारणा बनती है, इस वि-1य पर भी हिन्दुओं को विचार करना चाहिए।

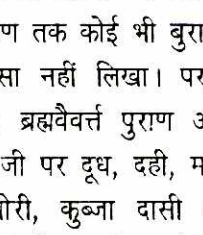

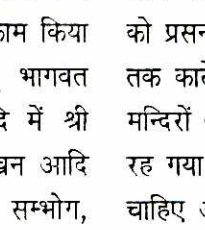

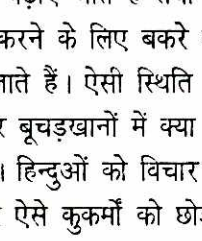

आर्यों के तीर्थ
दयानन्दमठ, दीनानगर
जिला गुरदासपुर (पंजाब)
को स्थापित हुए 75 वर्ष होने पर
हीरक जयन्ती समारोह
18, 19, 20 अक्तूबर, 2013
को बड़ी धूम-धाम एवं हर्षोल्लास से मनाया जायेगा
जिसमें आप सब महानुभाव सादर आमन्त्रित हैं।
निवेदक :- स्वामी सदानन्द सरस्वती
अध्यक्ष, दयानन्दमठ, दीनानगर एवं समस्त परामर्श समिति
सम्पर्क :- 01875-220110, 094782-56272, 094172-20110

आत्मिक शांति के लिये शुद्धता से करें आव्हान
प्रसन्न हो आशीर्वाद देंगे भगवान
शुद्ध एम डी एच
हवन सामग्री

शुभ दिनों, शुभ कार्यों एवं पावन पर्वों में शुद्ध घी के साथ शुद्ध जड़ी-बूटियों से निर्मित एम डी एच हवन सामग्री का प्रयोग कीजिये। शुद्धता में ही पवित्रता है। जहां पवित्रता है वहां भगवान का वास है, जो एम डी एच हवन सामग्री के प्रयोग से सहज ही उपलब्ध है।

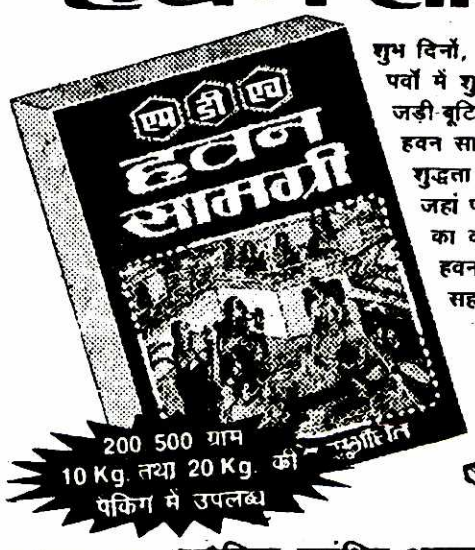

अलौकिक सुगंधित अगरबत्तियां

महाशियां दी हट्टी लि०
एम डी एच हाउस, 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-15 फोन : 5937987, 5937341, 5939609
ब्रांचेज : • दिल्ली • गाजियाबाद • गुड़गांव • कानपुर • कलकत्ता • नागौर • अमृतसर

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद–121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी–123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल–132001 (हरि०)
मै० ओमप्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत–132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक–124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल–132027 (हरि०)

आर्य-संसार

योग साधना व युवा-संस्कार

दिनांक 5 से 11 अगस्त 2013 को वैदिक योगाश्रम आर्यपुर जिला रोहतक में योग साधना कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में अनेक युवा सम्मिलित हुए। बाहर से भी साधक आये। आचार्य जी ने ध्यान की विधि के साथ-साथ दिन भर मन के ऊपर ध्यान रखने का महत्त्व बताया। वाणी, शरीर व मन के संकल्पमय होने पर ध्यान का लाभ हो सकता है। पतञ्जलि ऋषि ने कहा है कि यम-नियम के सिद्ध होने पर ही साधक आगे बढ़ सकता है। भोजन के लिए स्वयं साधक अपने व मित्रों को खिलाये। मैत्री, करुणा, मुदिता को बढ़ाते हुए दूसरों से द्वेष, क्रोध त्याग करे। दिनभर की साधना के बाद संध्या में मन शीघ्र एकाग्र होता है। कार्यक्रम अति लाभदायक रहा।

इसी प्रकार 16 अगस्त 2013 को मदीना में बृहद यज्ञ व उपदेश का कार्यक्रम हुआ। आचार्य जी के सान्निध्य में युवाओं ने यज्ञोपवीत धारण किया। आचार्य जी ने कहा यज्ञ के करने से मन की चंचलता दूर होती है और प्रभु की अनुकम्पा भी यजमान को मिलती है। शुभकर्म ही अगले जन्म के आधार होते हैं। कार्यक्रम में स्त्रियों ने भी यज्ञोपवीत धारण किये।

वैदिक योगाश्रम आर्यपुर (रोहतक)

9 अगस्त 2013 को ईद की नमाज़ के बाद मुसलमानों द्वारा किश्तवाड़ (जम्मू-कश्मीर) में हिन्दुओं के खिलाफ की गई हिंसा पर आधारित....

ये कैसी ईद, ये कैसा जश्न।
ये सदियों से अनसुलझा प्रश्न॥
ये कैसी ईद, ये कैसा जिहाद।
बुझ गये कई रोशन चिराग॥
ये कैसा जश्न कैसा त्यौहार।
मानवता हो गई तार-तार॥
ये कैसा मजहब ये कैसी सीख।
कर डाली लाल खूं से तारीख॥
ये कैसे रोज़े, कैसी नमाज़।
वहशीपन का होवे आगाज़॥
ये कैसी इबादत, कैसी बन्दगी।
खामोश हो गई मासूम जिंदगी॥
ये कैसी हुकूमत, ये किसका राज।
नित पीड़ित होता, हिन्दू समाज॥

—अंकुर 'रोहतकी' आदर्शनगर, रोहतक

ईश्वर ने सृष्टि को किसलिए उत्पन्न.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

के सत्य नियमों से होता है। सृष्टि का कारण रस अर्थात् जल, सूर्य की किरणों से आकाश में जाकर फिर वर्षा के रूप में पृथिवी में प्रविष्ट होता है, वही फ़िर पृथिवी से आकाश में आता है, इस प्रकार उन दोनों का परस्पर आकर्षण उपकारी होता है। समस्त ब्रह्माण्ड का संचालन ईश्वर के सत्य नियमों से होता है। हम विचार करें कि वे ईश्वर के कौन से सत्य नियम हैं जिनसे समस्त संसार का संचालन होता है।

ईश्वर के सत्य नियम—ईश्वर के सब नियम सत्य और पूरे हैं, ईश्वर का कोई नियम असत्य और अधूरा नहीं है, इसीलिए परमेश्वर को पूर्ण पुरुष कहते हैं। परमेश्वर जो सबसे प्रथम प्रकट था, जो सब जगत् को बनाने वाला है, जो सब जगत् में पूर्ण हो रहा है, जिसकी व्यापकता प्रकृति के कण-कण में है, उसकी व्यापकता के बगैर एक अणु भी नहीं है। इसका प्रमाण वेदों में है—यज्ञ के समय, हम पूर्णाहुति के समय बोलते हैं—**पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥**

ईश्वर पूर्ण है, उसके द्वारा रचित संसार पूर्ण है, ईश्वर पूर्ण ज्ञानवान् है। मेधा सम्पन्न पूर्ण ज्ञान को पूर्णरूपेण ग्रहण कर लेवें तो भी वह पूर्ण ही बचता है। ईश्वर में ही समस्त ब्रह्माण्ड का वास है।

विनम्रता

❑ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

किसी भी व्यक्ति को जीवन में सफल होने के लिए विनम्रता एक आवश्यक गुण है। उन्नति की सीढ़ियों पर चढ़ते हुये हमें नीचे की ओर देखकर हर कदम संभाल कर रखना होता है तभी हम सफलता पूर्वक अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। यदि हम नीचे देखकर यथार्थ की कठोर भूमि के ऊँचे-नीचे रास्तों पर संभलकर चलने के स्थान पर अहंकार के मद में डूब अकड़कर चलेंगे तो निश्चित रूप से समय की ठोकर खाकर गिर पड़ेंगे। स्वाभिमान और आत्मविश्वास रखना भी अनिवार्य गुण है परन्तु स्वाभिमानी भी वही श्रेष्ठ है जो विनम्रता को प्रथम स्थान पर रखता है। वैसे भी विनम्रता दिखाकर हम महान् व्यक्तियों के समकक्ष हो जाते हैं। जहाँ नम्रता से कार्य हो सकता हो वहां उग्रता व्यर्थ होती है।

ऋग्वेद में भी मनुष्यों को विनम्रता पूर्वक नीचे देखकर चलने का आदेश देते हुए कहा गया—'**अधः पश्यस्व मोपरि**' (8.33.19) विनम्रता पूर्वक नीचे देखने अर्थात् अपने से नीचे अभावग्रस्त दुखियों के कष्टों को देखकर हमें अपने कष्ट कम लगते हैं और हम स्वाभाविक रूप से ईश्वर का धन्यवाद करके प्रार्थना करते हैं कि हे ईश्वर! आपने हमें इन कष्टों से बचा रखा है और इसके विपरीत यदि हम अपने से ऊपर अर्थात् भौतिक रूप से अधिक सम्पन्न सुख-सुविधाओं वाले लोगों को देखते हैं तो हमारे मन में स्वयं के छोटा होने की कुंठा का भाव हो जाता है और अपनी स्थिति के प्रति असन्तोष के भाव से ग्रस्त हम उन सुख-सुविधाओं के अर्जन के लिए पापरूपी कर्म करने लगते हैं और अंततः ईश्वरीय न्यायव्यवस्था में उन पाप कर्मों के फल में दण्ड अर्थात् दुःख और कष्ट पाते हैं।

विनम्रता का अर्थ कमजोरी कदापि नहीं है अपितु विनम्रता में एक स्वाभाविक लचीलापन होता है परन्तु उस लचीलेपन में तनने की शक्ति है, जीतने की कला है और शौर्य की पराकाष्ठा है। जिससे विनम्रता नहीं वह विद्वान् नहीं हो सकता। विनम्रता के गुण से महान् व्यक्ति की पहचान होती है। जैसे एक फलों से लदा हुआ वृक्ष स्वाभाविक रूप से झुक जाता है और एक सूखा हुआ ठूंठ अकड़ कर तन कर खड़ा रहता है। परन्तु आँधी के सामने यह ठूंठ टूटकर गिर पड़ते हैं।

अकड़ू यूं तन कर खड़ा,
लगे ठूंठ-सा खूब।
आंधी में औंधा पड़ा,
बची रही लघु दूब॥

किसी विद्वान् संत से उनके शिष्य ने प्रश्न किया, ''**महाराज आप नीचे भूमि पर ही क्यों बैठते और अपना आसन लगाते हैं?**'' उस संत का उत्तर हम सभी के लिए अनुकरणीय और विनम्रता की पराकाष्ठा को लिए हुए था, ''**नीचे बैठने से गिरने की कोई संभावना नहीं रहती।**'' विनम्रता के कारण आया लचीलापन दर्शाता है कि उस व्यक्ति में जान है जबकि अकड़कर तन जाना तो बस मुर्दे की पहचान है।

किसी विद्वान् ने विनम्रता को परिभाषित करते हुए बड़े सटीक सुन्दर शब्दों में कहा, ''अत्यधिक प्रतिकूल परिस्थितियों में भी पूरी तरह समायोजित होने की क्षमता पैदा कर लेना ही विनम्रता है, इसीलिए विनम्र व्यक्ति कभी भी नहीं टूटता।''

जग में करनी अजब यह,
जानत है सब कोय।
जो जितना नीचे झुके,
उतना ऊँचा होय॥

धन, पद, ज्ञान या अन्य किसी गुण के कारण यदि मनुष्य विनम्रता छोड़कर उसके मद में मदमस्त होकर अहंकारी हो जाता है तो उसका विनाश अवश्यंभावी है। अहंकार एक ऐसा दीमक है जो अंदर ही अंदर खोखला करते हुए सबसे पहले उस गुण को खा जाता है जिसके कारण वह उत्पन्न हुआ है। इसीलिए विनम्रता को शरीर की अन्तरात्मा सभी गुणों की आधार-शिला और सर्वोत्तम गुण कहा गया। विनम्रता विद्या ज्ञान का प्रतिफल और सुख का आधार है इसलिए जीवन में सुखी रहने के लिए हमें विनम्र होना चाहिए। सम्पर्क-502 जी.एच. 27, सैक्टर-20, पंचकूला 09467608686, 01724001895

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये।

—आचार्य बलदेव

www.thearyasamaj.org

प्रभु उपासना से शरीर दृढ़ व मस्तिष्क दीप्त होता है

❑ डॉ० अशोक आर्य

जो जीव परमपिता परमात्मा की समीपता प्राप्त कर लेता है, उसके समीप बैठने का अधिकारी हो जाता है। वह जीव ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्मेन्द्रियों का समन्वय कर ज्ञान के अनुसार कर्म करने लगता है। समाज के साथ सामंजस्य स्थापित कर आपस में मेलजोल बनाते हुए, विचार विमर्श करते हुए ज्ञान के आचरण से कर्म करता है। समाज के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए कर्म करता है। उसका शरीर दृढ़ हो जाता है तथा उसका मस्तिष्क तेज हो जाता है। इस बात को ऋग्वेद के प्रथम अध्याय, सप्तम सूक्त के द्वितीय मन्त्र में इस प्रकार कहा गया है—

इन्द्र इन्द्र्योः सचा सम्मिश्ल आ वचोयुजा। इन्द्रो वज्री हिरण्ययः॥

ऋग्वेद का यह मन्त्र जीव को चार बातों के द्वारा उपदेश करते हुए बता रहा है कि—

1. ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्मेन्द्रियों का समन्वय—प्रभु की उपासना से, पिता की समीपता पाने से, उस परमेश्वर के समीप आसन लगाने से जीव में शत्रु को रुलाने की शक्ति आ जाती है। ऐसा जीव निश्चय ही वेद के निर्देशों का, आदेशों का पालन करते हुए अपने कर्मों में लग कर, व्यस्त होकर अपनी ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्मेन्द्रियों को समन्वित करने वाला होता है। वह कर्म व ज्ञानरूपी घोड़ों के साथ-साथ लेकर चलता है।

इसमें से किसी एक को भी ढील नहीं देता, समान चलाता है, समान रूप से संचालन करता है।

स्पष्ट है कि ज्ञानेन्द्रियां ज्ञान का स्रोत होने के कारण जीव की कर्मेन्द्रियों को समय-समय पर विभिन्न प्रकार के आदेश देती रहती हैं तथा कर्मेन्द्रियां तदनुरूप कार्य करती हैं, कर्म करती हैं। यह ज्ञानेन्द्रियां तथा कर्मेन्द्रियां समन्वित रूप से, मिलजुलकर कार्य करती हैं। आपस में किसी भी प्रकार का विरोध नहीं करतीं। इस कारण जीव को ऐसा कभी कहने कहने का अवसर ही नहीं मिलता कि मैं अपने धर्म को जानता तो हूँ किन्तु उसे मानता नहीं, उस पर चलता नहीं अथवा उसमें मेरी प्रवृत्ति नहीं है। उसके सारे के सारे कार्य, सम्पूर्ण क्रिया-कलाप ज्ञान के आधार पर ही, ज्ञान ही के कारण होते हैं।

2. समाज में मेल से चलना—इस प्रकार ज्ञान व कर्म का समन्वय करके चलने वाला जीव सदा मधुच्छन्दा को प्राप्त होता है, मधुरता वाला होता है, सब ओर माधुर्य की वर्षा करने वाला होता है। वह अपने जीवन में सर्वत्र मधुरता ही मधुरता फैलाता है। उत्तमता से सराबोर मेल कराने का कारण बनता है। समाज में ऐसा मेल कराने वाले जीव का किसी से भी वैर अथवा विरोध नहीं होता।

3. दृढ़ शरीर—इस प्रकार समाज को साथ लेकर चलने वाला जीव, सबके मेल-जोल का कारण बनता है, किन्तु यह सब कुछ वह तब ही कर पाता है जब उसका शरीर दृढ़ हो, शक्ति से भरपूर हो। अतः प्रभु की समीपता पाने से जीव का शरीर अनेक प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न होकर दृढ़ता भी पाता है, कठोरता को पाकर अजेय हो जाता है।

4. मस्तिष्क दीप्त—प्रभु की समीपता पाने से जहाँ जीव का शरीर कठोर हो जाता है, वहाँ उसका मस्तिष्क भी दीप्त हो जाता है, तेज हो जाता है। यह तीव्र मस्तिष्क जीव की बड़ी-बड़ी समस्याओं को, जटिलताओं को बड़ी सरलता से सुलझाने में सक्षम हो जाता है, समर्थ हो जाता है। उसे कभी किसी ओर से भी किसी प्रकार की चुनौती का सामना नहीं करना होता। यह मस्तिष्क की दीप्ति ही है जो उसे सर्वत्र सफलता दिलाती है।

इस प्रकार उस परमपिता की समीपता पाकर जीव का शरीर वज्र के समान कठोर होने से तथा मस्तिष्क में दीप्तता आने से वह जीव एक आदर्श पुरुष बनने का यत्न करता है, इस ओर अग्रसर होता है।

सम्पर्क-104 शिप्रा अपार्टमेंट,
कौशाम्बी-201010
जिला गाजियाबाद (उ.प्र.)
चलवार्ता 09718528068

वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

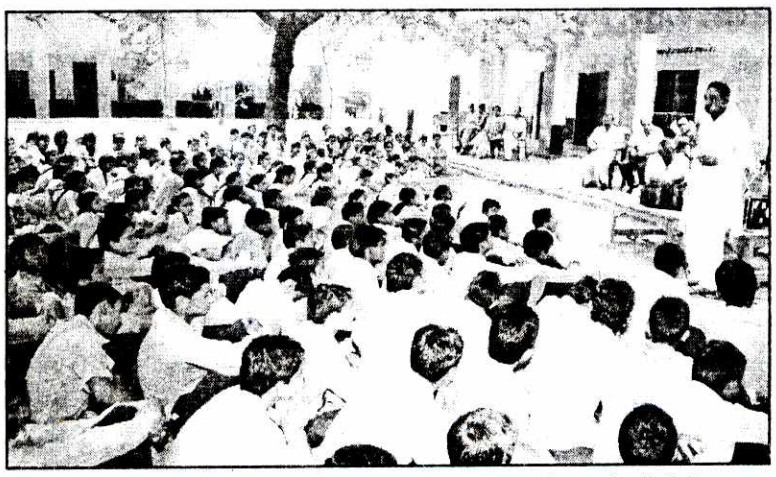

आर्यसमाज मन्दिर सिरसा के संरक्षक एवं उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा चौ० जगदीश सींवर शेखूपुरिया के नेतृत्व में वेदप्रचार का आयोजन गाँव भादड़ा एवं शेखूपुरिया में किया गया। यह कार्यक्रम राजकीय माध्यमिक विद्यालय में किया गया।

इस अवसर पर चौ० जगदीश सींवर जी ने कहा कि राष्ट्र का धन बैंकों में नहीं, विद्यालयों के बच्चे हैं। इनको झूठ, पाखण्ड, तांत्रिकों, सामाजिक कुरीतियों से बचाना है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रनिर्माण करने के लिए भजन, उपदेशों के माध्यम से बच्चे जल्दी सीखते हैं। हमारे महापुरुषों का बचपन बहुत ही अच्छा व संस्कारित था। महापुरुष उद्योगों में नहीं पूंजीपतियों में नहीं, बल्कि गरीब की झोंपड़ी में, किसान के घर में व तंगहाल जीवन में अच्छे संस्कारों से बनते हैं।

इस अवसर पर भादड़ा के सरपंच श्री रामप्रताप सहारण, बृजलाल पटवारी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक जसविन्द्र आर्य, महेन्द्र आर्य, राजेन्द्र आर्य, आचार्य परमजीत शास्त्री, अश्विनी कुमार मुख्याध्यापक बृजलाल पटवारी, रामप्रताप सरपंच, इन्द्रपाल आर्य, भागमल सूबेदार आदि प्रमुख जन उपस्थित थे।

जुकाम में असरकारक है काली मिर्च

मौसम बदलने के साथ ही मनुष्य के शरीर में भी परिवर्तन देखने को मिलते हैं। इनमें से सबसे प्रमुख बीमारी जुकाम है जिसके लक्षण सामान्यतः अधिकतर लोगों में दिखाई पड़ते हैं। अगर घरेलू उपचार के तरीके अपनाए जाएं तो जुकाम से बचा जा सकता है।

- सूखी खाँसी में काली मिर्च तथा मिश्री को मुँह में रखने से लाभ होता है।
- गले में खराश हो तो काली मिर्च चूसें।
- संतरे के रस में सेंधा नमक व काली मिर्च मिलाकर उसका नियमित सेवन करने से आंखों की ज्योति बढ़ती है।
- काला नमक, काली मिर्च व जीरा पीसकर उसे गर्म कर लें। पेट में कीड़े हों तो चूसने से आराम मिलता है।
- मलेरिया होने पर काली मिर्च और कुटकी का चूर्ण बना लें। उसे शहद तथा तुलसी के रस के साथ लेने से लाभ होता है।
- खाने के प्रति अरुचि हो तो काला जीरा, अनारदाना, सफेद भुना हुआ जीरा, काली मिर्च, मुनक्का, अमचूर तथा काला नमक (10-10 ग्राम) को पीसकर चूर्ण बनायें व इसे शहद के साथ खायें।
- पुराने जुकाम में खट्टा दही, गुड़ व काली मिर्च का चूर्ण तीनों को मिश्रण कर सेवन करने से लाभ होता है।
- बलगम होने पर 8-10 काली मिर्च पीस लें। इसमें नमक मिलाकर सूंघने से बलगम पानी होकर बह जाता है।
- अदरक का रस काली मिर्च तथा नींबू का रस, तीनों को मिलाकर बच्चों को चटाने से उनकी हिचकी बंद हो जाती है।
- सांस के रोगों में काली मिर्च के अर्क का सेवन लाभप्रद है।
- काली मिर्च, भुना जीरा, हींग, प्याज का रस व सेंधा नमक मिलाकर इसका सेवन करने से हैजा दूर होता है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।